रहीम के दोहे

रहीम

टूटे सुजन मनाइये, जो टूटे सौ बार
रहिमन फिरि - फिरि पोइये, टूटे मुक्ताहार ।।१।।

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरहूँ चटकाय,
टूटे से फिर न जुड़े, जुरै गाँठ परिजाय ।।२।।

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग,
चन्दन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग ।।३।।

समय पाय फल होत है, समय पाय झरि जात,
सदा रहै नहीं एक-सी, का रहीम पछितात ।।४।।

तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियहिं न पान,
कहि रहीम पर काज हित, सम्पत्ति संचहि सुजान ।।५।।

जो गरीब सो हित करे, धनि रहीम ते लोग,
कहाँ सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग ।।६।।

बड़े बड़ाई ना करै, बड़े ना बोले बोल,
रहिमन हीरा कब कहे, लाख टका मेरौ मोल ।।७।।

रहिमन गली साँकरी, दूजो नहीं ठहराहि,
आपु अहै तो हरि नहीं, हरि तो आपु नाहिं ।।८।।

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि,
जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि ।।९।।

चाह गई चिंता मिटी, मनुआ बेपरवाह,
जिनको कछु न चाहिए, वे साहन का साह ।।१०।।

भावबोध :- हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल के लोकप्रिय संत कवियों में रहीम का नाम अग्रगण्य है । इनका पूरा नाम अब्दुररहीम खानखाना था । इन्होंने अपने जीवनभर के अनुभवों के निचोड़ को दोहों में अत्यन्त सरल शब्दों में अभिव्यक्त किया है । रहीम ने नीति, प्रेम, धैर्य, उदारता, मित्रता, अहंकारशून्यता, वैराग्य तथा औचित्य का आत्मज्ञान देकर सत्य का साक्षात्कार कराया है । इनके दोहे सर्वोपयोगी, प्रभावशाली और प्रेरक हैं ।

- शब्दार्थ -

टूटे - रूठे । मुक्ताहार - मोतियों की माला । तोरहूँ - तोड़ो । जुरै - जुड़ना । उत्तम - श्रेष्ठ । प्रकृति - स्वभाव । कुसंग - बुरी संगति । विष - जहर । चाह - इच्छा । भुजंग - साँप । झरि - झड़ना । पछितात - पछताना । तरुवर- पेड़ । सरवर - तालांब । पान - पानी । परकाज - परोपकार । संचहि - संचित करना । बेपरवाह - बेफिक्र । बापुरो - बेचारा । मिताई - मित्रता । बड़ाई - बड़प्पन । मोल - मूल्य, कीमत । साँकरी - सँकरी । दूजो - दो चीजें । आपु - अहम्, अहंकार । तरवारि - तलवार । साह - भला आदमी, धनी, मालिक । साहन का साह - शाहंशाह, राजाओं का राजा ।

प्रश्न और अभ्यास

1. दीर्घ उत्तरमूलक प्रश्न -

   (i) रहीम के दोहे के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि चरित्रवान व्यक्ति कभी कुसंग के प्रभाव में नहीं आते ।

   (ii) रहीम प्रेम संबंध को न तोड़ने की सलाह क्यों देते हैं ?

   (iii) रहीम की दृष्टि में धनी कौन है तथा रहीम ने शाहंशाह किसे माना है ?

   (iv) परोपकारी व्यक्ति की प्रकृति कैसी होती है ?

2. अति संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न -

   (i) प्रेम की गली में कौन एक साथ नहीं रह सकते ?

   (ii) बड़ा और छोटा दोनों आकारों का अलग-अलग महत्व क्यों है ?

   (iii) बड़े लोगों की क्या विशेषता है ?

   (iv) परोपकारी व्यक्तियों की तुलना रहीम ने किससे की है ?

   (v) शाहंशाह कौन है ?

3. **सप्रसंग व्याख्या कीजिए -**

(i) जो रहिम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग,
चन्दन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग ।।

(ii) तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहिं न पान,
कहि रहीम परकाज हित, सम्पत्ति संचहि सुजान ।।

(iii) चाह गई चिंता मिटी, मनुआ बेपरवाह,
जिनको कछु न चाहिए, वे साहन का साह ।।

भाषा ज्ञान

4. **निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए -**

विष, सरोवर, कुसंग, भुजंग, मोल ।

5. **कोष्ठक में दिए गए शब्दों से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -**

(i) प्रेम का धागा ..... होता है । (नाजुक, कठिन, चमकीला)

(ii) बड़े लोग ..... होते हैं । (घमंड़ी, उदार, अहंकारशून्य)

(iii) हीरा ..... है । (मूल्यवान, उज्ज्वल, अनमोल)

(iv) कृष्ण और सुदामा की बड़ी ..... थी । (प्यार, शत्रुता, मित्रता)

6. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम रूप लिखिए -**

प्रेम, गरीब, लघु, उत्तम, समय, फूल ।

7. (i) रहिमन गली साँकरी, दूजो नहीं ठहराहि ।
आपु अहै तो हरि नहीं, हरि तो आपु नाहिं ।।

(ii) समय पाय फल होत है, समय पाय झरि जात,
सदा रहै नहीं एक-सी, का रहीम पछितात ।।

उपर्युक्त दोहों के साथ समान अर्थवाले अन्य कवियों के दोहों का संग्रह कीजिए । इसमें अपने शिक्षक की सहायता लीजिए ।

●